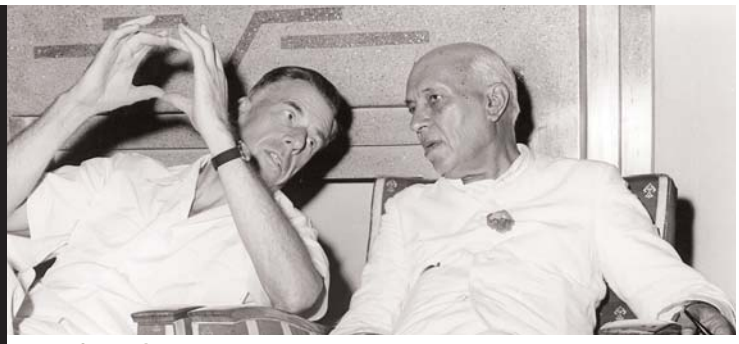

राजदूत गैलब्रेथ नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नेहरू के आवास तीन मूर्ति भवन में अक्सर जाते थे।

पूर्व अमेरिकी राजदूत

भारत-प्रेमी गैलब्रेथ

माइकल जे फ्राइडमैन

अर्थशास्त्री के रूप में प्रशिक्षित लेकिन राजनीति, कूटनीति और सामाजिक विश्लेषण के क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ने वाले हमारे युग के महत्वपूर्ण बुद्धिजीवी जॉन केनेथ गैलब्रेथ का 29 अप्रैल को 97 वर्ष की आयु में कैम्ब्रिज, मैसाच्युसेट्स में निधन हो गया।

अप्रैल 1961 से जुलाई 1963 तक गैलब्रेथ राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी के समय भारत में अमेरिका के राजदूत रहे। वर्ष 1956 में भारत के योजना आयोग को सलाह देने के बाद से ही वह इस पद को संभालने के इच्छुक थे। राजदूत के रूप में गैलब्रेथ ने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ मजबूत निजी संबंध बनाए, आर्थिक मामलों में सलाह दी और भारत को अधिक अमेरिकी सहायता की सिफारिश की। 1962 में चीन के साथ भारत के सीमा विवाद के दौरान अमेरिकी प्रशासन को भारत के पक्ष में झुकाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। वह भारतीय कला के जिज्ञासु संग्राहक थे और 1968 में मोहिंदर सिंह रंधावा के साथ मिलकर उन्होंने इंडियन पेंटिंग: द सीन्स, थीम्स एंड लेजेंड्स लिखी।

1991 में भारत ने अमेरिका और भारत के संबंधों को मजबूत बनाने में योगदान देने के लिए गैलब्रेथ को पद्म विभूषण से अलंकृत किया। सम्मान को स्वीकार करते हुए गैलब्रेथ ने कहा, ''भारत में अपनी दो कार्य-अवधियों की ओर देखकर मैं जितना गौरवान्वित महसूस करता हूं, उतना किसी और चीज से नहीं। भारत एक दिन संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र ही नहीं, दुनिया का सबसे सफल लोकतंत्र भी होगा- राजनीतिक और आर्थिक दोनों रूप में।''

ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड केनेज और अमेरिकी समाजशास्त्री थॉर्स्टीन वेब्लिन की अंतर्दृष्टि के आधार पर गैलब्रेथ ने आधुनिक अर्थतंत्र में सरकार, श्रम और कारोबार के संबंधों की मोटे तौर व्याख्या की। बढ़ते भौतिक उत्पादन और सामाजिक सेहत के मान्य संबंधों को उनकी चुनौती में नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन के कार्य और आर्थिक चिंतन की 'उत्तर-भौतिकतावादी' धारा का पूर्वाभास है।

15 अक्टूबर 1908 को ओंटेरियो, कनाडा में जन्मे गैलब्रेथ ने यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले से कृषि अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की। वर्ष 1934 में वह हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के अर्थशास्त्र विभाग से जुड़े और 1937 में उन्होंने अमेरिका की नागरिकता ले ली। अपनी पीढ़ी के बहुत से शिक्षाविदों की तरह गैलब्रेथ भी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट के प्रशासन से जुड़े। वह द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान बहुत-सी चीजों के मूल्यों को नियंत्रित रखने वाले मूल्य प्रशासन कार्यालय के एक प्रमुख अधिकारी के रूप में उभरे। इस पद के कारण उनके बहुत-से दुश्मन बने। 1943 में उन्होंने फॉर्च्यून पत्रिका के संपादक मंडल में शामिल होना स्वीकार कर लिया।

फॉर्च्यून में गैलब्रेथ का महत्वपूर्ण योगदान वे लेख थे जिनमें व्यक्त विचार केनेज अर्थशास्त्र के नाम से चर्चित हुए। केनेज ने कहा था कि बढ़ती बेरोजगारी 'मांग' की कमी का परिचायक है। केनेज के अनुसार 'मांग' में उपभोक्ता खर्च, निजी निवेश और सरकारी खर्च शामिल होता है। उन्होंने कहा था कि मुश्किल समय में जब उपभोक्ता और निजी व्यवसाय पर्याप्त खर्च या निवेश नहीं कर पाते तब मांग बढ़ाने और बेरोजगारी घटाने के लिए सरकार को अधिक खर्च करना चाहिए। फॉर्च्यून में काम करते हुए गैलब्रेथ ने इन अवधारणाओं को सामान्य पाठकों को समझाने की क्षमता विकसित की जो उनके बाद के कॅरिअर का आधार बनी।

1952 में छपी *अमेरिकन कैपिटलिज्म: द कंसेप्ट ऑफ काउंटरवेलिंग पावर* में गैलब्रेथ ने कहा कि हांलाकि बड़ी अमेरिकी कंपनियां अभूतपूर्व रूप से

ताकतवर हुई हैं लेकिन उनके कारण भावी समृद्धि के लिए जरूरी प्रौद्योगिकी का विकास भी हुआ है। गैलब्रेथ का कहना था कि फिर भी उन पर अंकुश रखा जाना चाहिए। सरकारी नियमन और मजदूर संगठन दो ऐसी ताकतें हैं जो ऐसा कर सकती हैं। पुस्तक में बौद्धिक साक्ष्यों की कमी भले ही रही हो, रोचकता और पठनीयता में कोई कमी नहीं थी। इस पुस्तक की चार लाख प्रतियां बिकीं और इसने गैलब्रेथ को अग्रणी बुद्धिजीवियों की कतार में खड़ा कर दिया। वर्ष 1958 में गैलब्रेथ की शायद सर्वाधिक प्रभावशाली पुस्तक *द एफ्लुएंट सोसायटी* प्रकाशित हुई। इसमें कहा गया कि अमेरिका ने आर्थिक असुरक्षा की समस्या हल कर ली है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने के बाद अमेरिकियों में निजी संपत्ति जमा करने की प्रवृत्ति बढ़ी जो जबर्दस्त विज्ञापनबाजी के सहारे बेची गई लेकिन अंततः अनावश्यक उपभोक्ता वस्तुएं ही हैं। दूसरी ओर स्वास्थ्य सेवाओं, आवास और यातायात जैसे 'जनकल्याणकारी' क्षेत्रों में देश गरीब ही बना रहा। गैलब्रेथ ने पढ़े-लिखे, बौद्धिक लोगों के एक 'नए वर्ग' (आलोचकों का कहना था कि ये गैलब्रेथ जैसे ही लोग हैं) का आह्वान किया कि वे निजी संपत्ति और सार्वजनिक दरिद्रता के संतुलन को ठीक करने की दिशा में काम करें।

द एफ्लुएंट सोसाइटी की दस लाख से अधिक प्रतियां बिकीं लेकिन आर्थिक विकास की रफ्तार धीमी करने के गैलब्रेथ के सुझाव विवादास्पद सिद्ध हुए। राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन के प्रशासन में काउंसिल ऑफ इकोनॉमिक एडवाइजर्स के अध्यक्ष लियॅन कीजरलिंग ने कटाक्ष किया, ''यह कल्पना कर पाना कठिन है कि यह सब लिखते हुए गैलब्रेथ साहब थे कहां। मुझे तो लगता है कि वह स्विट्जरलैंड में रहे होंगे। आज भी लाखों अमेरिकी परिवार पौष्टिक आहार नहीं जुटा पाते।'' यह विवाद बाद के दौर में दो जून की रोटी के हिमायती 'लंच पेल' उदारवादियों और कमाओ-खाओ-उड़ाओ मत के हामी 'लाइफ स्टाइल' उदारवादियों के अलग-अलग खेमों में बंटने की शुरुआत था।

1960 में कैनेडी राष्ट्रपति बने तो गैलब्रेथ राष्ट्रपति के विश्वस्त सलाहकार के रूप में उभरे। उन्होंने वियतनाम युद्ध में अमेरिकी हस्तक्षेप का मुखर विरोध किया। रक्षामंत्री रॉबर्ट मैक्नामारा ने बाद में याद किया, ''केन गैलब्रेथ खासतौर पर खतरनाक थे क्योंकि वह अपने विचारों को ऐसी रोचकता से प्रस्तुत करते थे जो कैनेडी को बहुत पसंद थी।''

भारत में राजदूत पद का कार्यकाल समाप्त करने के बाद गैलब्रेथ कैनेडी के उत्तराधिकारी के सलाहकार के रूप में वाशिंगटन लौटे लेकिन वियतनाम युद्ध के कारण राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन से उनका संबंध छूट गया। 1967 में गैलब्रेथ अमेरिकन्स फॉर डेमोक्रेटिक एक्शन के अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने उस उदारवादी राजनीतिक संगठन को अमेरिकी सेना के भारत-चीन अभियान के विरुद्ध और 1968 के चुनाव में जॉनसन के राजनीतिक विरोधी मिनेसोटा के सीनेटर यूजीन मैक्कार्थी के पक्ष में खड़ा करने में जबर्दस्त भूमिका निभाई। अपने लंबे अकादमिक कॅरिअर में गैलब्रेथ ने तीस से अधिक पुस्तकें और बहुत से लेख लिखे। वह हमेशा ही प्रगतिशील आर्थिक और सामाजिक नीतियों की वकालत करते रहे। वह मुश्किल अर्थशास्त्री के तौर पर पहचाने जाते थे और अक्सर ही टेलिविजन के फायरिंग लाइन कार्यक्रम में दिखते थे जहां परंपरावादी प्रस्तोता विलियम एफ. बकली से उनकी रोचक नोकझोंक होती। बाद के दौर में गैलब्रेथ पर सम्मानों की बौछार होती रही। 1999 में मॉडर्न लाइब्रेरी ने *द एफ्लुएंट सोसाइटी* को बीसवीं सदी में अंग्रेजी में लिखी गई 100 सर्वश्रेष्ठ गैरकथा पुस्तकों की सूची में शामिल किया। वर्ष 2000 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रेजिडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम से सम्मानित किया। □

''नई दिल्ली में अमेरिकी राजदूत के रूप में उनके कार्यकाल में उन्होंने हमारे देशों के बीच टिकाऊ मैत्री की नींव रखी जिस पर आज हम विश्वास और आपसी लाभ से परिभाषित एक नया ढांचा बनाने का प्रयास कर रहे हैं। भारतीयों की कई पीढ़ियां उनकी बुद्धिमता और हास्यबोध की प्रशंसक और उनके मैत्रीभाव के लिए कृतज्ञ रही हैं। उनके निधन के साथ ही भारत ने एक प्रिय और विश्वस्त मित्र, अर्थशास्त्र ने एक बेहद स्पष्ट टीकाकार, अमेरिकी जनता ने एक महान उदारवादी और तार्किक स्वर और संसारभर में फैले उनके प्रशंसकों ने एक महान गंभीर अध्यापक, विचारक, दार्शनिक, कूटनीतिज्ञ और शांति समर्थक खो दिया है।''

— प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह

लेखक: *माइकल जे फ्राइडमैन अमेरिका के विदेश विभाग के ब्यूरो ऑफ इंटरनेशनल इनफॉर्मेशन प्रोगाम्स द्वारा तैयार की जाने वाली द वाशिंगटन फाइल के लिए लिखते हैं।*

बिल्कुल बाएं से: गैलब्रेथ और उनकी पत्नी कैथरीन अक्टूबर 1962 में नए राजदूत आवास रूजवेल्ट हाउस के निर्माण कार्य के पूरा होने पर आयोजित समारोह में मजदूरों के साथ नृत्य करते हुए, नई दिल्ली के मद्रास स्कूल में राजदूत महोदय ने बच्चों को खाना परोसा, कृषि अर्थशास्त्री होने के नाते गैलब्रेथ को ग्रामीण इलाकों में जाने में आनंद आता था: उन्होंने उड़ीसा में एक खेत में धान की रुपाई होते देखी और केरल में नारियल की पैदावार का जायजा लिया।